नैक द्वारा 'बी' ग्रेड प्रत्यायित

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

मो. : 7897475917, 9794299451

Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : .....

दिनांक : 12.01.2019

प्रकाशनार्थ

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में आयोजित **भारत–भारती पखवारा का उद्घाटन विवेकानन्द जयन्ती समारोह** से हुआ। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए **दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के** भौतिकी विभाग के प्रोफेसर रविशंकर सिंह ने कहा कि धर्म भारत की आत्मा है। वेदान्त भारत का जीवन दर्शन है। भारतीय धर्म दर्शन की ताकत से विश्व को स्वामी विवेकानन्द ने परिचित कराया। स्वामी विवेकानन्द के दर्शन में भारत की वर्तमान चुनौतियों का समाधान है। स्वामी विवेकानन्द ने छुआ–छूत जैसे सामाजिक अभिशाप को भारत के पिछड़ापन का कारण मानते हुए कहा कि बिखरी हुई शक्ति और बिखरे हुए समाज को संगठित करके भारत पुनः विश्व गुरु बन सकता है। धार्मिक पाखण्ड और कुरितियों से हिन्दु धर्म को बचाकर मानव कल्याण का सशक्त माध्यम बनाने का उद्घोष स्वामी विवेकानन्द का परम उद्देश्य रहा है।

उन्होने आगे कहा कि भौतिकतावाद की अंधी दौड़ में दौड़ रहे समग्र जगत को सेवा, सम्मान, धर्म एवं स्वाभिमान जैसे गुणों को धारण करने का स्वामी विवेकानन्द नें उपदेश दिया था। वस्तुतः स्वामी विवेकानन्द एक ऐसे अवतारी पुरुष थे, जो हिन्दुत्व के प्रखर प्रहरी थे। आज के इस दौर में जबकि समाज बाजारवादी एवं भौतिकतावादी जीवन पद्धति से ग्रस्त होकर मनुष्य को स्वार्थी एवं आत्मकेन्द्रित बनाता जा रहा है, ऐसे में मानव जगत को सही पथ–प्रदर्शित करने के लिए स्वामी जी के दर्शन एवं विचार स्वतः ही प्रासंगिक हो जाते हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे **महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव** ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द की स्मृति मात्र से युवाओं में स्वस्फूर्त चेतना उत्पन्न हो जाती है। स्वामी जी मानवीय मूल्यों के प्रतिमूर्ति थे। मानव सेवा को सबसे बड़ा पुण्य कार्य मानते थे। आज के दौर में यदि हमें मानवीय मूल्यों का प्रस्फुटन अपनी अगली पीढ़ी में करना है तो उसके लिए हमें स्वामी विवेकानन्द जी के दर्शन एवं उनके विचारों को अपनाना होगा। स्वामी विवेकानन्द जी का कहना था कि धर्म मूलतः मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने वाला एक माध्यम है। धर्म हमें प्राणि मात्र से प्रेम करना सिखाता है। धर्म का एकमात्र लक्ष्य मानवता को अंधकार रूपी दलदल से निकाल कर ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर ले जाना है। स्वामी जी जन्म से नहीं अपने कर्म से

तत्वपुरुष और महान योगी बने थे। उन्होंने मानव जाति की सेवा करना ही आजन्म अपना कर्तव्य समझा। स्वामी जी का समग्र दर्शन समाजोत्थान पर आधारित था। उन्होंने मोक्ष से ज्यादा सामाजिक कल्याण पर बल दिया था।

कार्यक्रम का संचालन प्राचीन इतिहास, पुरतत्व एवं संस्कृति विभाग के **प्रवक्ता श्री सुबोध कुमार मिश्र** ने तथा आभार ज्ञापन भूगोल विभाग के **प्रभारी डॉ. विजय कुमार चौधरी** ने किया। इस अवसर पर डॉ. आर.एन. सिंह, डॉ. शिवकुमार बर्नवाल, डॉ. नन्दन शर्मा, डॉ. आरती सिंह, डॉ. मनीता सिंह, डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ. शिप्रा सिंह, डॉ. अभिषेक सिंह, डॉ. विनय कुमार सिंह, डॉ. प्रज्ञेश मिश्रा, डॉ. विरेन्द्र तिवारी, डॉ.राम सहाय, सुश्री प्रियंका मिश्रा, श्री श्रीकान्त मणि त्रिपाठी, श्री प्रतीक दास, सुश्री नुपूर शर्मा, सुश्री श्वेता चौबे, श्रीमती विभा सिंह, सुश्री रचना सिंह, सुश्री दीप्ती गुप्ता, श्रीमती पुष्पा निशाद सहित सभी शिक्षक एवं बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी